मदन मोहन मालवीय के शिक्षा दर्शन का राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में विश्लेषण

अर्चना पाल*
लालसा सिंह**

किसी भी देश में समय-समय पर लागू की गईं शिक्षा नीतियों का उद्देश्य बदलते परिवेश तथा आवश्यकतानुसार देश के राष्ट्रीय, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं बौद्धिक विकास के लक्ष्यों को पूरा करना है। साथ ही, देश के मूल्यों, आदर्शों, विचारों तथा संस्कृति के संरक्षण एवं संवर्धन में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करना भी होता है। इन्हीं मूल्यों एवं विचारों का प्रचार-प्रसार देश के कई विचारकों एवं समाज सुधारकों द्वारा किया गया, जिनमें महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय जैसे कई महान व्यक्ति हुए हैं। इस लेख में मदन मोहन मालवीय के आदर्शों एवं मूल्यों की प्रासंगिकता को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आधार पर विश्लेषित कर प्रस्तुत किया गया है। उनके विद्यालयी शिक्षा से उच्च शिक्षा तक के क्षेत्र में सामान्य एवं अपवंचित वर्ग, राष्ट्रवादी चेतना, सनातन संस्कृति के संरक्षण एवं संवर्धन, धार्मिक एवं नैतिक मूल्यों के विकास तथा सामाजिक सुधार से संबंधित विचार को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में समझने का प्रयास किया गया है।

मदन मोहन मालवीय भारतीय संस्कृति के साथ आधुनिक संस्कृति के समावेशन के पक्षधर थे, जिससे आधुनिक भारत का विकास हो सके। आज की युवा पीढ़ी के लिए उनके विचार मानवता की वह मिसाल हैं, जो उन्हें भावी जीवन में कर्तव्य पथ पर आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं। वह भारतीय परंपरा के अनुसार जीवन जीने का ऐसा मार्ग प्रशस्त करते हैं, जिसमें आधुनिकता के साथ भारतीय संस्कृति का समावेश हो। यह लेख उनके व्यक्तित्व की समीक्षा एवं उनके द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में किए गए सराहनीय कार्यों को दर्शाते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में यह दर्शाने का प्रयास करता है कि किस प्रकार उनके विचार आज भी पठन एवं मनन योग्य हैं। साथ ही, दार्शनिक तथा शिक्षाविद के रूप में उनका अनुसरण करके वर्तमान पीढ़ी स्वयं, समाज तथा राष्ट्र के विकास में अपना योगदान देने में सक्षम हो सकती है।

मानव जीवन में संस्कारों का विशेष महत्व होता है। संस्कारों का अर्थ होता है— व्यक्ति को सँवारना तथा उच्च स्तर तक पहुँचाना। ऐसे ही संस्कारों में पंडित मदन मोहन मालवीय का पालन-पोषण हुआ था।

* *शोधार्थी*, लखनऊ विश्वविद्यालय, बाबूगंज, हसनगंज, लखनऊ, उत्तर प्रदेश 226007
** *असिस्टेंट प्रोफ़ेसर*, ऋतुराज डिग्री कॉलेज, जयराम नगर, फतेहपुर, उत्तर प्रदेश 212601

"मदन मोहन मालवीय जी, युग परिवर्तन के थे वो सूत्रधार।
अडिग संकल्प और लोकमंगलकारी, भावना थी मन में जिनके अपार।।
वाणी और लेखनी में थीं उनके, सदैव सरस्वती माँ विराजती।
जन-जन को जो उनकी प्रतिभा से, मुखरित और प्रभावित थी करती।।
साहित्य की शाश्वत निधि बन, मानवता की बने वो अटूट मिसाल।
मानव धर्म सर्वोपरि रखते हुए, नित खोले उन्नति के नए द्वार।।
राजनीति, धर्म, शिक्षा, संस्कृति तथा, भारतीयता का ऐसा सामंजस्य बिठाया।
अंधकार धरा का मिटाने को, ज्ञान का अखंड द्वीप जलाया।।"

वह त्याग, धर्मरक्षा, पवित्रता, निष्ठा इत्यादि सद्गुणों से युक्त व्यक्तित्व के धनी थे। भारतीय शिक्षा व्यवस्था को विशिष्ट दिशा देने में उनका बहुत बड़ा योगदान है, जो कि वर्तमान *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* के सापेक्ष अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रासंगिक है। वह भारत की उन महान विभूतियों में से एक हैं, जिन्होंने राष्ट्र निर्माण, समाज सेवा का सपना देखा और उसे साकार भी किया। उन्होंने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय जैसी प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थान की स्थापना की, जो आज भी सफलता के उच्च शिखर पर है।

मदन मोहन मालवीय का एक सपना था कि देश का प्रत्येक व्यक्ति साक्षर हो। उनके इस सपने को वर्तमान शिक्षा नीति साकार करते हुए प्रतीत हो रही है। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में उल्लिखित 3 से 18 वर्ष के प्रत्येक बच्चे की स्कूली शिक्षा में 100 प्रतिशत सकल नामांकन अनुपात (जी.ई.आर.) के साथ, पूर्व-विद्यालय (प्री-स्कूल) से माध्यमिक स्तर तक की शिक्षा के सार्वभौमीकरण का लक्ष्य *शिक्षा का अधिकार कानून 2009* के तहत रखा गया है। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में मदन मोहन मालवीय के शैक्षिक विचारों की झलक स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। उनके द्वारा सामाजिक असमानताओं, जाति-प्रथा एवं सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन, धार्मिक एवं नैतिक मूल्यों के विकास में, मज़दूरों एवं किसानों के हित में किए गए अनेक कार्यों के अतिरिक्त शिक्षा के क्षेत्र में भी उनके कार्य एवं विचार राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार प्रासंगिक हैं। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में उन्होंने तकनीकी एवं औद्योगिक शिक्षा पर बल देते हुए युवाओं को आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित किया है। इस लेख में लेखिकाओं द्वारा उनके व्यक्तित्व की समीक्षा और विचारों का अध्ययन राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में करके यह बताने का भी प्रयास किया है कि किस प्रकार वे भारतीय शिक्षा के विकास एवं उन्नयन में एक अलौकिक कड़ी बने? उनके द्वारा विविध सरोकारों पर दिए गए विचारों को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 से जोड़ते हुए प्रासंगिक विश्लेषण निम्न प्रकार प्रस्तुत किया गया है।

राष्ट्रवादी चेतना संबंधी विचार एवं कार्य

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 राष्ट्रव्यापी स्तर पर गहन विचार विमर्श के परिणामस्वरूप एवं वैश्विक स्तर पर रोज़गार की परिस्थितियों तथा समस्याओं को ध्यान में रखकर लागू की गई है। यह नीति मदन मोहन

मालवीय द्वारा किए गए प्रयासों के सापेक्ष सार्थक प्रतीत होती है। वह संपूर्ण स्वदेश के खोए हुए गौरव को स्थापित करने के लिए निरंतर प्रयासरत रहे। वह सनातन संस्कृति और भारतीय भाषा के पक्षधर थे। वह सच्चे देशभक्त थे। उनके जीवन का प्रत्येक क्षण राष्ट्र के लिए समर्पित था।

उन्हें एशिया के सबसे बड़े विश्वविद्यालय (काशी विश्वविद्यालय, बनारस) के संस्थापक के रूप में जाना जाता है। इस विश्वविद्यालय में विदेशों से भी लोग शिक्षण अध्ययन करने आते हैं।

सामाजिक क्षेत्र में किए गए कार्य

शिक्षा और समाज के संबंध से वह भली-भाँति परिचित थे, इसलिए उन्होंने समाज में सुधार लाने के लिए एवं सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन के लिए शिक्षा पर बल दिया। उन्होंने भारतीय संस्कृति का उत्थान, वंचितों के कष्ट का निवारण, हरिजनों का उत्थान, सनातन धर्म का प्रचार आदि सभी सामाजिक क्षेत्रों में अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य किए। वह सभी जातियों एवं धर्म का सम्मान करते थे। वह छुआछूत जैसी सामाजिक संकुचित विचारधाराओं के विरोधी थे (तिवारी, 2021)। उन्होंने अहिंसा के विचारों का प्रतिपादन करते हुए सामाजिक परिवर्तनवादी दृष्टिकोण का भी परिचय दिया। जो वर्तमान में युवाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

धार्मिक एवं नैतिक मूल्यों के विकास हेतु किए गए कार्य

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के भाग 1, अध्याय 4 के बिंदु 4.23 में एक सफल, अभिनव, उत्पादक व्यक्ति बनने के लिए विद्यार्थियों को कुछ विषय, कौशल एवं क्षमताओं को सीखना आवश्यक बताया गया है, जिनमें नैतिकता एवं मूल्य ज्ञान भी शामिल हैं। मदन मोहन मालवीय चाहते थे कि नवीन सभ्यताओं में भी पुराने रीति-रिवाज, परंपराएँ अपना अस्तित्व बनाए रखें। वह नैतिक और धार्मिक शिक्षा के पक्ष में थे। वह जीवन के लिए धर्म को आवश्यक मानते थे। उनका मानना था कि धार्मिक नियमों का पालन करने से हमारी नैतिक प्रगति होती है। वर्तमान शिक्षा नीति में इस बात की प्रासंगिकता स्पष्ट रूप से देखने को मिलती है। साथ ही, *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* के संदर्भ बिंदु 6.20 में भी स्पष्ट रूप से उल्लिखित है कि विद्यालयी पाठ्यक्रम में मानवीय मूल्यों, विभिन्न संस्कृतियों, धर्मों, भाषाओं, जेंडर-आधारित अस्मिता आदि पर विस्तृत जानकारी सम्मिलित करनी होगी, जो कि विविधता के प्रति सम्मान की भावना तथा संवेदनशीलता के विकास में सहायक हो सके। उनका मानना था कि मानव जीवन में नैतिक मूल्यों का ह्रास नहीं होना चाहिए। व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास एवं चरित्र निर्माण मनुष्य के जीवन का लक्ष्य होना चाहिए। इस संदर्भ में मदन मोहन मालवीय के वैयक्तिक गुणों से ये सीख ले सकते हैं कि नवीन सभ्यताओं को सीखने के साथ-साथ "एक भारत श्रेष्ठ भारत" पहल के अंतर्गत अपनी परंपराओं, रीति-रिवाजों, नैतिक मूल्यों को सीखना एवं अपनाना होगा, तभी हम प्रगतिशील बन सकेंगे।

सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन हेतु किए गए कार्य

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के भाग 1 के 4.28 बिंदु के अंतर्गत कम उम्र में ही विद्यार्थियों को

"जो सही है, उसे करने" के महत्व को सिखाने तथा नैतिक बोध के विकास की अनुशंसा की गई है, जिससे विद्यार्थियों में पारंपरिक भारतीय मूल्यों एवं सभी बुनियादी, मानवीय व संवैधानिक मूल्यों को विकसित किया जा सके, जो कि मदन मोहन मालवीय द्वारा तत्कालीन सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन हेतु किए गए समस्त प्रयासों को देखते हुए समीचीन है। तत्कालीन समय में कई सामाजिक कुरीतियाँ विद्यमान थीं, जैसे— बाल विवाह, विधवा विवाह, बेमेल विवाह, बालिका व्यापार इत्यादि। शिक्षा तथा समाज के आपसी संबंध से वे परिचित थे, इसलिए उन्होंने समाज में सुधार लाने के लिए एवं सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन के लिए शिक्षा के माध्यम से जागरूकता लाने का मार्ग अपनाया।

रोज़गारोन्मुख शिक्षा को बढ़ावा देना

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के भाग 2 में अध्याय 16 के अंतर्गत 16.1 से लेकर 16.6 तक के समस्त संदर्भ बिंदुओं के पठन, चिंतन तथा मनन से यह समझने का प्रयास किया जा सकता है कि भारत में बेरोज़गारी के क्या कारण हैं? इसका प्रत्युत्तर है— अब तक शिक्षा व्यवस्था में विद्यालय स्तर पर व्यावसायिक शिक्षा को कम महत्व दिया जाना है। फलस्वरूप उच्च स्तर की शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात भी अधिकांश जनसंख्या बेरोज़गार है। बेरोज़गारी को कम करने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में व्यावसायिक शिक्षा को क्रमबद्ध तरीके से स्कूली व उच्च शिक्षा में समावेशित करने की अनुशंसा की गई है, जिससे स्थानीय स्तर पर कौशल आधारित रोज़गार के अवसरों का विश्लेषण कर चिह्नित क्षेत्रों में व्यावसायिक शिक्षा प्रदान की जा सके। ताकि सामाजिक-आर्थिक स्थिति के आधार पर सभी वर्ग के व्यक्तियों को जीवकोपार्जन के समान अवसर उपलब्ध किए जा सकें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के भाग 1 के बिंदु 6.2.2 में अन्य पिछड़ा वर्ग पर विशेष ध्यान देने की बात रखी गई है, जो मदन मोहन मालवीय के पिछड़े वर्गों के लिए किए गए अथक प्रयासों के परिप्रेक्ष्य में आज भी उतनी ही प्रासंगिक है और स्पष्ट करती है कि क्यों उनके द्वारा किए गए कार्य सराहनीय हुए। उन्होंने बंधुआ मज़दूर व्यवस्था को समाप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

व्यावसायिक शिक्षा को उच्च शिक्षा प्रणाली का अभिन्न अंग बनाने तथा कृषि उत्पादकता को बढ़ाने के लिए कृषि से संबंधित विषयों में स्थानीय ज्ञान, जलवायु परिवर्तन, नवीन तकनीक के उपयोग इत्यादि की जानकारी (*राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* के भाग 3, अध्याय 20 के अंतर्गत संदर्भ बिंदु 20.2 एवं 20.3) कृषि शिक्षा द्वारा प्रारंभ से ही देकर विद्यार्थियों को तैयार किया जाए, तो भारतीय अर्थव्यवस्था मज़बूत होगी।

स्कूली शिक्षा हेतु किए गए कार्य

मदन मोहन मालवीय के शिक्षा के क्षेत्र में किए गए कार्य युग-युगांतर तक याद किए जाएँगे। उनका मानना था कि शिक्षा की समुचित व्यवस्था करना राज्य की ज़िम्मेदारी है। वह शिक्षा की ऐसी प्रणाली विकसित करना चाहते थे, जिसमें प्रारंभिक और माध्यमिक शिक्षा नि:शुल्क हो। इस बात की चर्चा *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में भी अभिचिह्नित है। उनका मानना था कि शिक्षा व्यवस्था ऐसी हो, जिसमें कोई भी बालक शिक्षा से वंचित न हो। उन्होंने विद्यार्थियों की दिशा

एवं दशा सुधारने हेतु पुस्तकालय एवं छात्रावासों का निर्माण भी कराया।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के भाग 1 के बिंदु 6.16 में स्कूली शिक्षा में सभी अध्ययनरत एस. ई. डी. जी. (सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित), प्रतिभाशाली तथा मेधावी विद्यार्थियों के लिए विशेष छात्रावास, सेतु पाठ्यक्रम, शुल्क माफ़ी व छात्रवृत्तियों की सहायता प्रदान करने की अनुशंसा निःसंदेह मदन मोहन मालवीय के द्वारा किए गए शैक्षिक प्रयासों के समीचीन प्रतीत होती है। शिक्षा के बेहतर अवसर प्रदान करने हेतु उन्होंने केवल बालक वर्ग का ही नहीं अपितु बालिकाओं एवं स्त्रियों के लिए भी उचित शैक्षिक प्रयास किए। उन्होंने शिक्षा के व्यापक प्रचार-प्रसार के लिए कई सराहनीय कार्य किए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी आज के युवा वर्ग से उनकी तरह श्रेष्ठ गुणों से युक्त अध्येता, शिक्षक एवं नागरिक बनकर संपूर्ण राष्ट्र के विकास में सहयोग की अपेक्षा करती है।

स्त्री शिक्षा हेतु किए गए कार्य

मदन मोहन मालवीय राष्ट्रीय कार्यक्रमों के द्वारा स्त्री शिक्षा को बढ़ावा देने एवं स्त्रियों को इतना सक्षम बनाना चाहते थे कि वह भारत के पुनर्निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकें। वह देश सेवा के लिए स्त्रियों को भी पुरुषों के समान ही महत्वपूर्ण मानते थे। उनका मानना था कि समाज में सभी स्त्रियाँ शिक्षित होनी चाहिए, तभी उन्होंने 1904 में गौरी पाठशाला की स्थापना की थी। वह एक संतुलित समाज चाहते थे, इसीलिए वह स्त्री शिक्षा की समुचित व्यवस्था को अनिवार्य मानते थे। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* के भाग 1 के बिंदु 6.7 एवं 6.8 में सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित समूहों की बालिकाओं के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की व्यवस्था तथा उनकी वर्तमान और भावी पीढ़ियों के शैक्षिक स्तर को उठाने हेतु सर्वोत्तम व्यवस्था की गई है। साथ ही, जेंडर-समावेशी निधि के गठन की बात भी की गई है, जिसका उद्देश्य जेंडर या अन्य किसी भी कारण से वंचित समूह के बच्चों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराना है।

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में किए गए कार्य

मदन मोहन मालवीय का उच्च शिक्षा के क्षेत्र में प्रयास का सर्वप्रथम उदाहरण काशी विश्वविद्यालय है, जो पूरे एशिया में चर्चित एवं देश का सबसे प्रतिष्ठित केंद्रीय विश्वविद्यालय है। इस विश्वविद्यालय की स्थापना कर वह बच्चों को शिक्षित करना चाहते थे, जो शिक्षा ग्रहण कर देश का मस्तक गर्व से ऊँचा करें एवं भारतीय संस्कृति का प्रचार एवं प्रसार कर सकें।

उनका कहना था कि विद्यार्थियों के लिए यदि तकनीकी शिक्षा व चिकित्सा शिक्षा की व्यवस्था तथा भारत में विज्ञान एवं तकनीक को अधिक बढ़ावा नहीं दिया गया, तो भारत का औद्योगिक विकास संभव नहीं होगा। अपने इन्हीं विचारों के तहत उन्होंने शिक्षा को लेकर उच्च लक्ष्यों का निर्माण किया और यथासंभव उनकी पूर्ति के लिए आजीवन प्रयासरत रहें। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* के द्वितीय भाग के संदर्भ बिंदु 9.1.3 के अनुसार उच्च शिक्षा का लक्ष्य ऐसा हो, जो विद्यार्थियों को सामाजिक रूप से जाग्रत करे तथा नागरिकों के जीवन को उन्नत भी करें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अध्याय 9 के बिंदु 9.1.1 का भी संदर्भ देना यहाँ उचित होगा,

जिसमें यह स्पष्ट रूप से उल्लिखित है कि इक्कीसवीं सदी की आवश्यकताओं को देखते हुए गुणवत्तापूर्ण उच्चतर शिक्षा का उद्देश्य अच्छे, चिंतनशील, बहुमुखी प्रतिभा वाले रचनात्मक व्यक्तियों का विकास होना चाहिए। उच्च शिक्षा को व्यक्तिगत उपलब्धि, ज्ञान, रचनात्मक सार्वजनिक सहभागिता व समाज के उत्पादक में योगदान को सक्षम बनाते हुए, विद्यार्थियों को अधिक संतोषजनक जीवन व कार्य के लिए तैयार कर, आर्थिक रूप से स्वावलंबी बनाने की ओर उन्मुख होना चाहिए, जो कि उनके विचारों को दर्शाता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अध्याय 11 के बिंदु 11.4 में इक्कीसवीं शताब्दी तथा चौथी औद्योगिक क्रांति हेतु स्कूली तथा उच्च शिक्षा दोनों को ही समग्र एवं बहुविषयक शिक्षा की पटरी पर चलना होगा, यदि ऐसा न किया गया तो व्यक्ति के बौद्धिक, सौंदर्यात्मक, सामाजिक, शारीरिक, भावनात्मक व नैतिक क्षमताओं का विकास संभव नहीं हो सकेगा। अतः हम यह कह सकते हैं कि उन्होंने यह सपना काशी विश्वविद्यालय की नींव रखते समय अवश्य देखा होगा।

तकनीकी शिक्षा के विकास हेतु किए गए कार्य

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 वर्तमान शिक्षा के विभिन्न आयामों को प्रौद्योगिकी के माध्यम से अंगीकृत करने पर बल देती है। शिक्षा में प्रौद्योगिकी की उपयोगिता एवं आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए ही राष्ट्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी मंच (एन.ई.टी.एफ़.) के निर्माण की बात की गई है, जो निश्चित रूप से संपूर्ण शिक्षा व्यवस्था में क्रांतिकारी परिवर्तन लाएगी।

वह भी देश की निर्धनता तथा बेरोज़गारी के प्रति चिंतित थे। देश के आर्थिक विकास के लिए इंजीनियरिंग और तकनीकी शिक्षा की व्यवस्था करने में उन्होंने अथक प्रयास किए। वह जानते थे कि राष्ट्र के आर्थिक विकास के लिए भारी उद्योगों की आवश्यकता है। अतः उन्होंने यूरोपीय विज्ञान, इंजीनियरिंग और तकनीकी शिक्षा की व्यवस्था को आवश्यक बताया।

तकनीकी शिक्षा के संबंध में उनके विचार दूरगामी सिद्ध हुए। वह राष्ट्र के विकास के लिए कितने आवश्यक है? इसकी परिकल्पना पूर्व में ही कर चुके थे, जिसकी अनुशंसा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 मज़बूती से करती है।

पत्रकारिता एवं साहित्य प्रकाशन के क्षेत्र में किए गए कार्य

जनसंचार के लिए पत्रकारिता तथा प्रेस के माध्यम से राष्ट्र के बड़े भू-भाग पर सूचनाओं का संवहन अत्यंत सरलता और सहजता से किया जा सकता है। पत्रकारिता और साहित्य के माध्यम से लोगों को जागरूक करना तथा उनमें संवेदना उत्पन्न करना है।

मदन मोहन मालवीय का पत्रकारिता और साहित्य प्रेम उन्हें सदैव निष्पक्ष एवं कुशल व्यक्तित्व का स्वामी बनाता है। वह पत्रकारिता को एक कला मानते थे, उन्होंने नए तरीके से पत्रकारिता की शुरुआत की तथा हिंदी प्रेस की नींव रखी। वह *इंडियन यूनियन, अभ्युदय, भारत, लीडर, मर्यादा, सनातन धर्म* आदि नामक पत्रिकाओं के संरक्षक एवं प्रेरणा स्रोत थे। अपनी समस्त पत्रिकाओं एवं समाचार-पत्रों में वे स्वस्थ आलोचना करते थे। किसी भी ऐसे विज्ञापन का प्रकाशन नहीं करते थे, जिससे कि समाज पर उसका बुरा प्रभाव पड़े (पांडेय, 2007)। उनके साहित्य और

पत्रकारिता के इस लगाव को आज के युवाओं को आत्मसात करने की आवश्यकता है।

निष्कर्ष

मदन मोहन मालवीय ने देश की प्रगति के लिए संघर्ष तथा अथक प्रयास किए। वह देश में अज्ञानता का अंधकार हटाकर शिक्षा का प्रकाश फैलाना चाहते थे। वह जाति प्रथा का विरोध करते थे, देश के हर नागरिक को शिक्षित करने के लिए प्रयासरत रहते थे, इसलिए उन्होंने गौरी पाठशाला, काशी विश्वविद्यालय जैसे श्रेष्ठ शिक्षण संस्थानों की स्थापना की, जो आज भी पूरे एशिया में विख्यात है। साथ ही मदन मोहन मालवीय नारी शिक्षा के भी पक्षधर थे, उन्होंने साहित्य के क्षेत्र में भी अभूतपूर्व योगदान दिया। वह भारतीय संस्कृति के साथ-साथ आधुनिक संस्कृति का ऐसा समावेश करना चाहते थे, जिससे भारत न केवल प्रगतिशील पथ पर अग्रसर हो, अपितु समस्त विश्व में विख्यात भी हो। इस लेख में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनेक संदर्भ बिंदुओं के संदर्भ में मदन मोहन मालवीय के विचारों का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। उनका व्यक्तित्व निश्चित रूप से आज के युवा वर्ग के लिए प्रेरणादायक है। उन्होंने देश को आज़ाद कराने एवं देश के विकास के लिए गहन संघर्ष किया और अपने अंतिम समय तक अपना अतुलनीय योगदान देते रहे।

संदर्भ

पांडे, विश्वनाथ. 2011. *महामना मदन मोहन मालवीय— व्यक्तित्व, कृतित्व एवं विचार*. वाराणसी काशी हिंदू विश्वविद्यालय.

पांडेय, रामशकल. 2007. *उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक*. विनोद पुस्तक भंडार. आगरा.

मानव संसाधन विकास मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. भारत सरकार, नई दिल्ली.

तिवारी, ए. के. 2021. सोशियो-पॉलिटिकल आइडियाज़ ऑफ़ मालवीय एंड इंडियन फ्रीडम मूवमेंट. *इंडियन जर्नल ऑफ़ सोशल स्टडीज़ एंड ह्यूमैनिटीज़*. 1(7). पृष्ठ संख्या 38–44.

https://www.blogger.com/blog/post/edit/6222401373144877699/3370412650626856184 retrieved from https://archanapaal.blogspot.com/on 17/10/2022.